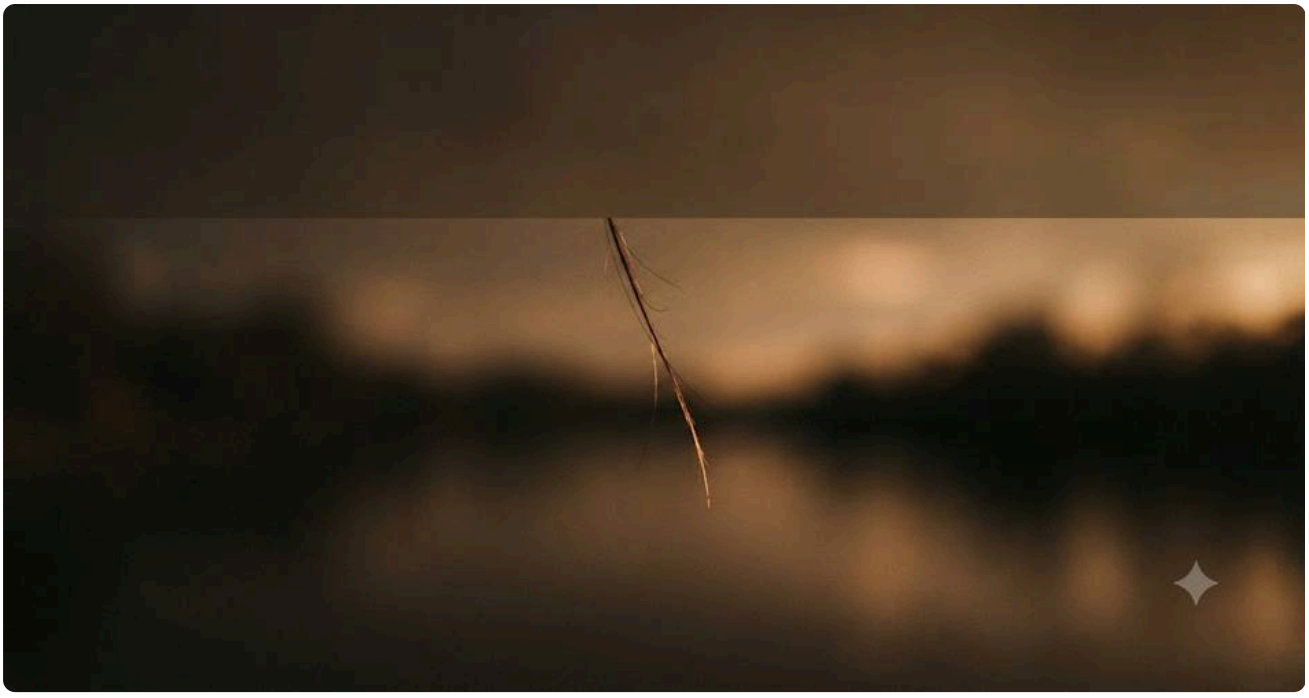

बाल

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

बाल एक ऐसी बारीकी हैं जिसे समझने का लोग सिर्फ़ दिखावा करते हैं। इसे कोई स्वच्छता कहता है, कोई सौंदर्य, कोई पहचान, कोई संस्कृति, कोई रस्म। असल में यह महज़ एक सरहद है — उसके बीच जो तुम दिखाते हो और जो तुम छिपाते हो।

कोई इसे नाइयों के हवाले करता है, कोई ब्यूटीशियनों के, तो कोई उन आधुनिक मशीनों के, जो आज़ादी और परिपूर्णता का वादा करती हैं। पर बाल वहीं जमे रहते हैं, ज़िद्दी, एक जैविक याद दिलाते हुए: सामाजिक प्राणी होने से पहले तुम एक जानवर हो।

और फिर भी, यह कोई दुश्मन नहीं है। यह एक असहज दोस्त है, एक हमसफ़र जो तुम्हें याद दिलाता है कि तुम कहाँ से आए हो। इसका फैलाव लगभग केशिकाओं जैसा है, इसका रंग तुम्हारे आनुवंशिक नक़्शे से तय होता है, और इसके साथ एक ऐसी कहानी जुड़ी है जिसे तुम मिटा नहीं सकते। जो लोग गंजेपन से जूझते हैं, वे भी इससे अछूते नहीं — उन्होंने बस इसे कुछ समय के लिए खो दिया है, और वह समय कितना है, यह कोई नहीं बता सकता।

पर बालों को समझने के लिए तुम्हें उसी उद्गम तक लौटना होगा — जहाँ तुम हमेशा लौटते हो: आदिम मानव तक।

मैं इसकी कल्पना यूँ करता हूँ, एक प्रागैतिहासिक नोयर दृश्य में। घास की एक दीवार के पीछे दो आकृतियाँ बातें कर रही हैं। एक तीसरा व्यक्ति वहाँ आता है और भाँप नहीं पाता कि इनमें मर्द कौन है और औरत कौन। चेहरा काफ़ी नहीं है। चेहरा धोखा देता है।

तो औरत अपनी पहचान की नियति को बदल देने का फ़ैसला करती है।

वह नदी के पास जाती है, पानी में ख़ुद को निहारती है, और एक दाढ़ी देखती है। यह उसे पसंद नहीं। यह उसका प्रतिनिधित्व नहीं करती। यह उसे अलग नहीं दिखाती।

वह एक धारदार पत्थर ढूँढती है और एक-एक करके बाल हटाने लगती है। उसे पता चलता है कि बाल दोबारा धीरे-धीरे उगते हैं — और यही उसे एक फ़ायदा देता है: उसे यह रस्म रोज़ दोहरानी नहीं पड़ती। और उसे इससे भी ताक़तवर एक बात पता चलती है: मर्द अब उसे अलग नज़रों से देखता है।

फ़र्क़ आकर्षण बन जाता है। फ़र्क़ भाषा बन जाता है।

वहीं से बालों की पूरी संस्कृति जन्म लेती है: पहले प्रतीकात्मक, फिर सामाजिक, फिर स्वच्छता से जुड़ी, फिर वैज्ञानिक, और फिर वैचारिक।

ठेठ आधुनिक अतिवादों तक: कोई कहता है कि बाल तुम्हें जीवाणुओं से बचाते हैं और इन्हें रखना ही चाहिए; कोई कहता है कि स्वीकार्य होने के लिए इन्हें हटा देना चाहिए; कोई कहता है कि वांछनीय होने के लिए इन्हें तराशना चाहिए।

सच्चाई इससे कहीं सरल है: बाल जन्म लेते हैं, बढ़ते हैं, मुड़ते हैं... और जिस बिंदु पर वे मुड़ते हैं, वहीं वे मर जाते हैं। पर जड़ ज़िंदा रहती है, ज़िद्दी, कुछ ऐसे विचारों की तरह जिन्हें तुम इच्छाशक्ति से भी नहीं हटा सकते।

और फिर एक आख़िरी नियम है, वह जिसे सिर्फ़ किस्सागो जानते हैं: जड़ को कभी उपद्रव में मत बदलो। फ़र्क़ बहुत मामूली है — बस एक स्वर का। पर यह सब कुछ बदल देता है।

फर्दिनांदो

आर्काइव | फर्दिनांदो फ्रेगा — नांदो, लेखक | © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।